राधा कमल मुखर्जी (7 दिसम्बर 1889 - 24 अगस्त 1968)

आधुनिक भारत के प्रसिद्ध चिन्तक एवं समाजविज्ञानी थे। वे लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र के प्राध्यापक तथा उपकुलपति रहे। उन्होने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। प्रोफेसर मुकर्जी के ही नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में सर्वप्रथम लखनऊ विश्वविद्यालय में 1921 में समाजशास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ हुआ इसलिए वे उत्तर प्रदेश में समाजशास्त्र के प्रणेता के रूप में भी विख्यात हैं। प्रोफेसर मुकर्जी वे इतिहास के अत्यन्त मौलिक दार्शनिक थे। वे 20वीं सदी के कतिपय बहुविज्ञानी सामाजिक वैज्ञानिकों में से एक थे जिन्होंने विभिन्न विषयों- अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, परिस्थितिविज्ञान, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, साहित्य, समाजकार्य, संस्कृति, सभ्यता, कला, रहस्यवाद, संगीत, धर्मशास्त्र, अध्यात्म, आचारशास्त्र, मूल्य आदि विभिन्न अनुशासनों को अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान किया है। इन समस्त क्षेत्रों में प्रोफेसर मुकर्जी की अद्‌वितीय देन उनके द्‌वारा प्रणयित 50 अमर कृतियों में स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है।

भारत सरकार द्‌वारा उन्हें सन १९६२ में पद्‌म भूषण से सम्मानित किया गया था।

प्रोफेसर राधा कमल मुकर्जी का जन्म 7 दिसम्बर 1889 को पश्चिमी बंगाल के मुर्शिदाबाद जनपद के एक छोटे से कस्बे बहरामपुर में हुआ था। उन्होने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा जुलाई 1905 में कृष्णनाथ कालेजिएट स्कूल बहरामपुर से प्रारम्भ की। 1904 में माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् उच्च शिक्षा हेतु कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज में प्रवेश लिया। 1908 में अंग्रेजी साहित्य एवं इतिहास तथा सामान्य विषय दर्शनशास्त्र के साथ स्नातक आनर्स परीक्षा उत्तीर्ण की। शिक्षक बनने का लक्ष्य बनाकर अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र विषय का चयन करके कलकत्ता विश्वविद्‌यालय में प्रवेश लिया। उसी वर्ष कलकत्ता विश्वविद्‌यालय में अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र विषय का स्नातकोत्तर स्तर का संयुक्त पाठ्‌यक्रम प्रारम्भ किया गया था। मुकर्जी का स्नातकोत्तर स्तर पर अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र का चयन अनायास ही नहीं था अपितु उनके ही शब्दों में **"कलकत्ता की बस्तियों में दुःख-दारिद्रय, गंदगी और अधःपतन के साथ जो मेरा आमने-सामने परिचय हुआ उसने मेरी भविष्य रूचि को अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र की ओर आकर्षित किया।"** देश एवं राष्ट्र के लिए अध्ययन के विचार से प्रभावित होकर उन्होंने स्नातकोत्तर स्तर पर अर्थशास्त्र विषय का चयन किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि अर्थशास्त्र ही भारतीय दरिद्रता, शोषण एवं आधीनता जैसे गम्भीर मुद्‌दों के वैज्ञानिक एवं उचित उत्तर दे सकता है। 21 वर्ष की आयु में वर्ष 1910 में एम.ए. अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वह कलकत्ता विश्वविद्‌यालय से अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र विषय की स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने वाले विद्‌यार्थियों के प्रथम समूह में थे। राधाकमल मुखर्जी का देहावसान 'ललित कला अकादमी' परिसर में ही सामान्य सभा की बैठक की अध्यक्षता करते हुए 24 अगस्त, 1968 में हुआ।

'ललित कला अकादमी' के द्‌वितीय अध्यक्ष डॉ. राधाकमल मुखर्जी का योगदान अकादमी के लिये अविस्मरणीय है। राधाकमल मुखर्जी का देहावसान अकादमी परिसर में ही सामान्य सभा की बैठक की अध्यक्षता करते हुए हुआ था। ऐसे महान् पुरुष की स्मृति में वर्ष 1970 से प्रतिवर्ष 'डॉ. राधाकमल मुखर्जी व्याख्यानमाला' का आयोजन किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत देश के ख्याति प्राप्त कलाकार, इतिहासकार तथा कला समीक्षकों को आमंत्रित किया जाता है।

चूंकि मानव संस्थाएं व्यक्ति, समाज और मूल्यों की अविभाज्य एकता बनाती हैं, इसलिए उनके मूल्य घटक के बिना सामाजिक तथ्यों पर कोई भी विचार अवास्तविक है; इसके बजाय, 'अनुभवजन्य' और 'मानक' समाजशास्त्र का सम्मिश्रण होना चाहिए, इसलिए, मनुष्य का विकास एक स्वतंत्र समाज में समानता और सहयोग के माध्यम से संभव है, न कि विरोधाभास और संघर्ष के माध्यम से।

-रामकृष्ण मुखर्जी (1979)

राधाकमल मुखर्जी की समाजशास्त्र की दृष्टि, हालांकि भारतीय परंपरा में निहित थी, फिर भी सार्वभौमिक थी। उन्होंने सामाजिक क्रिया सिद्धांत के आधार पर समाजशास्त्र के एक सामान्य सिद्धांत को विकसित करने की संभावना देखी। भारत के मामले में यह सिद्धांत भारतीय दर्शन और परंपरा से लिया जाएगा।

लेखन :

मुखर्जी ने कई मुद्दों पर करीब 53 किताबें लिखीं। उनके लेखन की मूल प्रकृति सामाजिक विज्ञानों का एकीकरण है। वे कई क्षेत्रों में पथ-प्रदर्शक रहे हैं। उनके कई छात्र और सहयोगी अपने लेखन में इस दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

मुखर्जी के प्रारंभिक लेखन में तत्वमीमांसा और 'आदर्शवाद' के प्रति झुकाव देखा गया था, जैसे:

1. तीन तरीके: पार करने का रास्ता - धर्म एक सामाजिक आदर्श के रूप में (1929)

2. समाजशास्त्र और रहस्यवाद (1931)

3. रहस्यवाद का सिद्धांत और कला (1937)

मुखर्जी की अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ इस प्रकार हैं:

1. भारतीय अर्थशास्त्र की नींव (1916)

2. भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था (1926)

3. क्षेत्रीय समाजशास्त्र (1926)

4. भारत की भूमि समस्याएँ (1927)

5. सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय (1928)

6. अवध के खेत और किसान (1929)

7. रीजनल बैलेंस ऑफ़ मैन (1938)

8. मनुष्य और उसका निवास स्थान (1940)

9. अर्थशास्त्र का संस्थागत सिद्धांत (1940)

10. इंडियन वर्किंग क्लास (1945)

11. मूल्यों की सामाजिक संरचना (1949)

12. नैतिकता की गतिशीलता: नैतिकता का एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक सिद्धांत (1950)

13. अंतरजातीय तनाव (सह-लेखक) (1951)

14. रेस, लैंड्स एंड फ़ूड (1946)

15. कला का सामाजिक कार्य (1948)

16. मूल्यों की सामाजिक संरचना (1949)

17. समाज का एक सामान्य सिद्धांत (1956)

18. सामाजिक विज्ञान का दर्शन (1960)

19. मेट्रोपोलिस की सामाजिक रूपरेखा (1963)

20. मानव मूल्यों के आयाम (1964)

21. सभ्यता की नियति (1964)

22. भारतीय कला का उत्कर्ष (1964)

23. जिला नगर परिवर्तन: गोरखपुर का सामाजिक और आर्थिक सर्वेक्षण (बी. सिंह के साथ) (1964)

24. मानव जाति की एकता (1965)

25. मानवतावाद का मार्ग: पूर्व और पश्चिम (1968)

26. भारत में सामाजिक विज्ञान और योजना (1970)।

मुखर्जी की सामाजिक विचारधारा

मुखर्जी की सामाजिक विचारधारा "निम्न तथ्यों पर आधारित है

1. भारतीय संस्कृति और सभ्यता

2. समाज का सिद्धांत

3. सार्वभौमिक सभ्यता की अवधारणा

4. आर्थिक लेन-देन और सामाजिक व्यवहार

5. व्यक्तित्व, समाज और मूल्य

6. समुदायों का समुदाय

7. शहरी सामाजिक समस्याएँ

8. सामाजिक पारिस्थितिकी

1- भारतीय संस्कृति और सभ्यता

मुखर्जी (1964) भारतीय कला और वास्तुकला, इतिहास और संस्कृति पर विस्तार से लिखते हैं। उनका मानना है कि एशियाई कला का उद्देश्य सामूहिक विकास है। उनके अनुसार, सद्भाव जीवन का मूल मूल्य है। भारतीय संस्कृति ने मनुष्य को समुदाय के एक जिम्मेदार सदस्य के रूप में देखा है। भारतीय कला सामाजिक या नैतिक क्षेत्र में अंतर्निहित है। -

"भारत के असंख्य मंदिर, स्तूप और विहार नैतिकता, धार्मिक और सामाजिक मूल्यों के बीच संबंध के साक्षी हैं। भारत में कला लोगों के एक-दूसरे के साथ संपर्क का एक स्थायी घटक है जो लोगों की आकांक्षाओं और उनकी कलात्मक रचनात्मकता के बीच सक्रिय संबंध को ठोस रूपों में दर्शाता है।"

-मुखर्जी

उन्होंने लिखा है भारतीय कला हमेशा धर्म से जुड़ी रही है। मुखर्जी हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म या जैन धर्म जैसे भारतीय धर्मों की गैर-आक्रामक प्रकृति से प्रभावित हैं। विविधताओं के प्रति सहिष्णुता की भावना धर्मशास्त्रों में भी परिलक्षित होती है। किसी विशेष विश्वास या अनुष्ठान के बजाय परम सत्य पर जोर देना भारतीय धर्मों की एक निरंतर विशेषता रही है। धर्म के शांतिपूर्ण माध्यम से ही भारतीय संस्कृति और सभ्यता भारत की प्राकृतिक भौगोलिक सीमाओं से परे सीलोन (श्रीलंका) और दक्षिण-पूर्व के देशों तक फैली।

2-समाज का सिद्धांत

राधाकमल मुखर्जी ने मानव जीवन को समझने के लिए अंतःविषय या अंतर-विषयी दृष्टिकोण पर जोर दिया। उन्होंने समाज का एक सामान्य सिद्धांत विकसित करने का प्रयास किया। इसे प्राप्त करने के लिए, उन्होंने भौतिक या प्राकृतिक विज्ञानों और मनुष्य के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं से संबंधित विज्ञानों के बीच की बाधाओं को तोड़ने का प्रस्ताव रखा और मानव व्यक्तित्व के विविध आयामों और प्राकृतिक पर्यावरण और सामाजिक पर्यावरण के साथ इसकी अंतःक्रिया को पर्याप्त रूप से समझने के लिए भौतिक और प्राकृतिक विज्ञानों के बीच विचारों का पारस्परिक आदान-प्रदान आवश्यक है।

3-सार्वभौमिक सभ्यता की अवधारणा

मुखर्जी का समाज का सामान्य सिद्धांत सार्वभौमिक सभ्यता के मूल्यों की व्याख्या करना चाहता है। उन्होंने 'सभ्यता' शब्द का इस्तेमाल समावेशी अर्थ में किया; संस्कृति इसका हिस्सा है। उनका प्रस्ताव है कि मानव सभ्यता का अध्ययन तीन परस्पर संबंधित स्तरों पर किया जाना चाहिए।

a. जैविक विकास b. सार्वभौमिकरण c. आध्यात्मिक आयाम

a. जैविक विकास : मनुष्य के जैविक विकास ने सभ्यता के उत्थान और विकास में सहायता की है। उनमें सक्रिय एजेंट के रूप में पर्यावरण को बदलने की क्षमता है। जानवर केवल पर्यावरण के अनुकूल ही बन सकते हैं, लेकिन

मनुष्य इसे विभिन्न तरीकों से ढाल सकते हैं। जैविक प्रजाति के रूप में मनुष्य प्रतिस्पर्धा और संघर्ष पर काबू पाने और सहयोग (सहजीवन) प्राप्त करने में सक्षम हैं।

b. सार्वभौमिकरण : सामाजिक मनोविज्ञान में, लोगों को अक्सर नस्ल, जातीयता या राष्ट्रवाद के ढांचे के भीतर दर्शाया जाता है। मनुष्य को छोटे-छोटे स्वार्थों या अहंकारों के कैदी के रूप में देखा जाता है, जिनके दृष्टिकोण संकीर्ण या जातीय होते हैं। इसके विपरीत, मनुष्य में संकीर्ण भावनाओं पर काबू पाने और सार्वभौमिकता प्राप्त करने की क्षमता होती है, यानी अपने आप को अपने राष्ट्र जैसे बड़े समूह या यहां तक कि ब्रह्मांड के सदस्य के रूप में पहचानना। इस प्रक्रिया में, सामान्य मूल्य विशिष्ट मूल्यों को सार्वभौमिक मूल्यों के अधीन करने में मदद करते हैं।

c. आध्यात्मिक आयाम : मुखर्जी का मानना है कि सभ्यता का एक आध्यात्मिक आयाम है। मनुष्य धीरे-धीरे पारलौकिक ऊंचाइयों को छू रहा है। इसका मतलब है कि वे जैविक और अस्तित्वगत स्तरों, यानी भौतिक और भौतिक सीमाओं की बाधाओं को पार करके आध्यात्मिकता की सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं। इस प्रयास में, कला, मिथक और धर्म ऊपर की ओर बढ़ने के लिए 'प्रेरणा' या बल प्रदान करते हैं। मुखर्जी के अनुसार, एकता, संपूर्णता और उत्कृष्टता के लिए मानव जाति की खोज सभ्यता की आध्यात्मिकता को उजागर करती है। इस संबंध में, उन्होंने भारतीय और चीनी सभ्यताओं की सराहना की, जो छठी शताब्दी ईसा पूर्व से स्थिर संस्थाओं के रूप में टिकी हुई थीं।

4- आर्थिक लेन-देन और सामाजिक व्यवहार :

किसी विशेष विषय में अत्यधिक विशेषज्ञता मनुष्य के अस्तित्व और व्यवहार के बारे में केवल एकतरफा या आंशिक दृष्टिकोण दे सकती है। अपने संस्थागत अर्थशास्त्र सिद्धांत में मुखर्जी ने दिखाया है कि भारतीय पश्चिमी अर्थशास्त्र और उसने स्वदेशी व्यवसाय, हस्तशिल्प और बैंकिंग में पारंपरिक जाति नेटवर्क को ज्यादातर नजरअंदाज कर दिया। भारत जैसे देश में, जहाँ बड़ी संख्या में आर्थिक लेन-देन जाति या जनजाति के ढांचे के भीतर होते हैं, बाजार मॉडल की केवल सीमित प्रासंगिकता है। भारतीय परिवेश में आर्थिक आदान-प्रदान पारंपरिक नेटवर्क से प्रभावित रहा है। भारत के गिल्ड और जातियाँ गैर-प्रतिस्पर्धी प्रणाली में काम करती रही हैं।

आर्थिक विनिमय के नियम मुख्यतः सामाजिक या सामूहिक जीवन के मानदंडों से लिए गए थे। भारतीय परंपरा के मानदंडों में समूहों के बीच परस्पर निर्भरता या गैर-प्रतिस्पर्धा पर जोर दिया गया है। उन्होंने स्वार्थ को बढ़ावा देने पर जोर नहीं दिया, बल्कि समुदाय की भलाई को मानव जीवन के उचित लक्ष्य के रूप में उजागर किया।

5-व्यक्तित्व, समाज एवं मूल्य

अपनी पुस्तक पर्सनालिटी में राधाकमल व्यक्ति के व्यक्तित्व को एक ऐसे एजेंट के रूप में देखते हैं, जो निर्णय लेता है और चुनाव करता है, तथा मूल्य-पूर्ति चाहता है। मनुष्य (i) स्वयं, (ii) दूसरे, तथा (iii) ब्रह्मांड से संबंधित मूल्यों के संदर्भ में चुनाव करता है तथा कार्य करता है।

मनुष्य दो तरह के प्रभावों के अधीन होता है। एक तरफ प्रकृति, पर्यावरण और जैविक प्रेरणाओं और जरूरतों का प्रभाव होता है। इसके अलावा मनुष्य के मनोवैज्ञानिक आवेग भी होते हैं। दूसरी तरफ समाज या सामूहिकता का दबाव होता है। मानव व्यक्तित्व इन दोनों प्रभावों से बहुत प्रभावित होता है।

मुखर्जी ने व्यक्तित्व को विभिन्न आयामों पर समायोजन के व्यक्ति के विशिष्ट तरीके के योग के रूप में परिभाषित किया है:

(i) जैविक (ii) सामाजिक (iii) आदर्श, ब्रह्मांडीय या पारलौकिक"।

मानव व्यक्तित्व एक **जैविक और सामाजिक प्राणी** के रूप में पर्यावरण के साथ व्यवहार करता है। लेकिन, यह उससे कहीं अधिक है। यह "मनोवैज्ञानिक-सामाजिक समग्रता है जो ब्रह्मांडीय समग्रता के प्रति उत्तरदायी है"। मुखर्जी के अनुसार, "व्यक्तित्व अनिवार्य रूप से पारलौकिकता है"। किसी पुरुष या महिला के व्यक्तित्व का एक सामाजिक आयाम होता है।

राधाकमल के अनुसार, समाज “संरचनाओं और कार्यों का योग है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने पर्यावरण के तीन आयामों या स्तरों के प्रति स्वयं को उन्मुख करता है:-

(क) पारिस्थितिक,

(बी) मनो-सामाजिक, और

(ग) नैतिक

इस प्रकार, समाज “जीविका की स्थिति और मूल्य-पूर्ति की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करता है”।

मूल्य "सामाजिक रूप से स्वीकृत इच्छाएँ या लक्ष्य हैं जिन्हें कंडीशनिंग और समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से आंतरिक रूप दिया जाता है। वे व्यक्तिपरक प्राथमिकताएँ, मानक और आकांक्षाएँ उत्पन्न करते हैं।" मूल्य मनुष्य को अपनी इच्छाओं और लक्ष्यों को एक निर्धारित पैटर्न में उन्मुख करने में मदद करते हैं। इस प्रकार, मनुष्य अत्याचारी जैविक आवेगों के आंतरिक तनावों या संघर्षों को हल करता है।

मूल्य की अवधारणा इच्छाओं, लक्ष्यों, आदर्शों और मानदंडों में विभाजित है। सामाजिक क्रिया में इच्छाएँ लक्ष्य हैं। आदर्श का निर्माण एक काल्पनिक सामाजिक स्थिति में किया जाता है, जिसमें लक्ष्यों के बीच टकराव होता है। मानदंड विरोधी या विरोधाभासी आदर्शों के मध्यस्थ होते हैं। वे ब्रह्मांड के मानवीय, उद्देश्यपूर्ण क्रम से परे का संकेत देते हैं। आधुनिक समाजों के लिए मूल समस्या उन मूल्यों का सृजन और पोषण करना है जो एक ओर मानव व्यक्तित्व के पूर्ण विकास और अभिव्यक्ति की ओर ले जाएं, तथा दूसरी ओर सद्भाव, व्यवस्था और एकजुटता की व्यापकता की ओर ले जाएं। **यह तीन मान्यताओं पर आधारित है:-**

A. मूल्य मनुष्य की बुनियादी इच्छाओं और आवेगों को स्थिर और सुसंगत तरीके से एकीकृत करने और पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

B. मूल्य दायरे में सामान्य होते हैं और व्यक्तिगत और सामाजिक प्रतिक्रियाओं और दृष्टिकोणों दोनों से बने होते हैं। मूल्य उनके प्रतीकात्मकीकरण के माध्यम से सभी द्वारा साझा किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय ध्वज एक सामान्य प्रतीक है जो एक राष्ट्र का निर्माण करता है।

C. विभिन्न लोगों और संस्कृतियों के मूल्यों की विविधता और भिन्नता के बावजूद, कुछ सार्वभौमिक मूल्य पहचाने जा सकते हैं।

6-समुदायों का समुदाय

मानव विकास के आयामों में:

मुखर्जी ने क्रमिक आयामों के विकास में जीवन, मन और समाज के रचनात्मक, एकीकृत और सामंजस्यपूर्ण सिद्धांतों की खोज की, जबकि **द फिलॉसफी ऑफ पर्सनालिटी और द डाइमेंशन्स ऑफ वैल्यूज़: ए यूनिफाइड थ्योरी** दोनों में, उन्होंने मानव अस्तित्व और उत्कृष्टता की पारस्परिक प्रकृति और सभी मूल्यों और संभावनाओं की एकता, पारस्परिक भागीदारी और विलय पर जोर दिया है। आम तौर पर, मनुष्य अपने ब्रह्मांड और उसके संसाधनों का विस्तार जीवन, मूल्यों और समुदाय की गहनता, समृद्धि और विस्तार के लिए निरंतर रचनात्मक, विकास की पारलौकिक प्रक्रिया में कभी नहीं करता है। समुदाय का दर्शन इसे "एक ब्रह्मांड, एक समुदाय" के पैटर्न के रूप में देखता है। इस संदर्भ में, समुदाय के दर्शन का अर्थ है समुदाय और ब्रह्मांड में मनुष्य की अप्रत्याशित भूमिका, होमो यूनिवर्सलिस के मूल्यों और संभावनाओं का गहन अध्ययन।

7-शहरी सामाजिक समस्याएँ

मुखर्जी ने श्रमिक वर्ग की समस्याओं के प्रति सुधारात्मक दृष्टिकोण की परिकल्पना की है। भारत में पिछले कई दशकों से हो रहा औद्योगीकरण विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं के लोगों को एक साथ लाने में सफल रहा है। लेकिन, मुंबई, कानपुर, कोलकाता और चेन्नई जैसे शहरी केंद्रों में श्रमिकों की जीवन स्थितियों पर झुग्गी-झोपड़ियों के जीवन का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। औद्योगीकरण के शुरुआती दिनों में, शहरी झुग्गियों ने वेश्यावृत्ति, जुआ और अपराध जैसी बुराइयों को जन्म दिया। इसलिए, श्रमिकों की आर्थिक और नैतिक स्थितियों को सुधारने के लिए उनके जीवन में व्यापक बदलाव लाना आवश्यक था। आज, कई निजी उद्योग और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयाँ अपने श्रमिकों को सामाजिक कल्याण के लिए सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं। इसके अलावा, केंद्र और राज्य सरकारों ने विधायी अधिनियम बनाए हैं, जो नियोक्ताओं के लिए बाध्यकारी हैं। हालाँकि, असंगठित श्रमिक (यानी, जो बेरोजगार हैं, या अस्थायी रूप से कार्यरत हैं) अभी भी झुग्गियों में रहते हैं।

वर्तमान में भारतीय झुग्गी-झोपड़ियों में व्याप्त समस्याएँ हैं अवैध शराब और नशीली दवाओं का सेवन, अपराध, तथा आवास की स्थिति और नागरिक सुविधाओं का बिगड़ना। इसलिए, मुखर्जी का श्रमिक वर्ग का विश्लेषण भारत में वर्तमान औद्योगिक संगठन के लिए भी प्रासंगिक है।

8-सामाजिक पारिस्थितिकी

मनुष्य के सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए यह आवश्यक है कि वह समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ-साथ प्रकृति या पर्यावरण या पारिस्थितिकी के साथ भी रहे। राधाकमल मुखर्जी का 'सामाजिक पारिस्थितिकी' कहे जाने वाले अध्ययनों में योगदान अद्वितीय है। भूवैज्ञानिक, भौगोलिक और जैविक कारक मिलकर एक पारिस्थितिकी क्षेत्र का निर्माण करते हैं। पारिस्थितिकीय परिस्थितियाँ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों से भी प्रभावित होती हैं। दरअसल, मानव या सामाजिक पारिस्थितिकी मनुष्य और उसके पर्यावरण के बीच पारस्परिक संबंधों के सभी पहलुओं का अध्ययन है।

उन्होंने ऐसे संबंधों को पौधों और जानवरों के बीच होने वाले संबंधों के समान माना। मुखर्जी ने तर्क दिया कि मनुष्यों के बीच पारिस्थितिक संबंध काफी हद तक निचले जीवों के बीच के संबंधों के समान हैं। लेकिन, मनुष्यों के मामले में, सांस्कृतिक मानदंडों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव पारिस्थितिकी इस तथ्य को उजागर करती है।उन्होंने बेमतलब शहरीकरण पर भी दुख जताया। पारिस्थितिकी के दृष्टिकोण से उन्होंने शहरीकरण के विचार और प्रक्रिया को बरकरार रखा। ग्रामीण इलाकों की कीमत पर शहरी विकास पर रोक लगाई जानी चाहिए। कृषि में विविधता लानी चाहिए और उद्योगों का विकेंद्रीकरण करना चाहिए।

मुखर्जी ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि (i) अत्यधिक चराई, (ii) पेड़ों और झाड़ियों का अविवेकी विनाश, और (iii) खेती की दोषपूर्ण पद्धति पूरे क्षेत्र की जैवभौतिक संरचना में गंभीर असंतुलन लाती है। यह प्रकृति के चक्र को गंभीर रूप से प्रभावित करता है।

डॉ. राधाकमल मुखर्जी ने अपने विचारों से सामाजिक विज्ञान में अंतःविषय दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया और भारतीय समाज और संस्कृति की गहरी समझ विकसित करने में योगदान दिया। उनके काम ने समाजशास्त्र के क्षेत्र को समृद्ध किया और सामाजिक विज्ञान के अध्ययन के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया.